This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

Checked 2012

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रंथालय
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M 2011 विषय मंत्रशास्त्र

नांव श्रीपद्मावती मंत्रको विधान देवी) (हिन्दी)

लेखक / लिपीकार – (MSS.)

पृष्ठ 08 काळ वि.सं. 1946. पूर्ण / अपूर्ण

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

M 2011

॥अथपद्र्केजन्त्रकोविधानलिषते श्रीगणेशायनमः॥ अथपंद्राकेजन्त्रकोविधान
१ लिषते॥ ॐ श्रींह्रींक्लींचांमुंडाकिचरदेवीनमोनम्हाउह्रासर्वकंारजवनावैस्वाहा
एमंत्रलिषजंत्रनेरैतोसिधहोई॥ स्त्रीकष्टीहोईतो॥ आटके॥ अंकैतेजंत्रभ
रौजोएकैरुआठवेरलिषकेपानीमेपिवावैतोवलकहोई॥ अनुजोबालककौ
वारौतीलगीहोईतोएकके अंकतोजंत्रनेरै दिनतीनएकसैआठरोजजंत्रपि
वावैतौनीकोहोई॥२॥अरुजा॥ स्त्रीकेलकीनजियताहोईतौपांचके॥ अं
कतेनेरैहजार१...तौदुसमदुषपावै॥ लरकाजियै॥ जोसातके॥ अंकते

मेष लीम्बधांत बी २७ | वृष कोनप मवार | मीन्युन तुल कुम | कारकावृसचो मीन

४	८	२	सो लो	हरस चिदा	८	१	६	रास जहसुलो	८	३	४	लोलो मो मसलो	२	७	६		सदहदा
३	५	७		वरेल	३	५	७	रसव रेला	७	५	८	कापुरमो लकसो	८	५	१		सलोष वे६७हो
८	१	६			४	८	२		६	७	२	हदी सलो ब२७ध्य	४	३	२		नर६ धारधाहो

सोव

प्रपंचापंनउमकेहप्रचापदररोहता

मदे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

२

जंत्रभरै एकसैतीसवेरच्योईवालककौपिवावैतौवालवुधवानहोई॥ अरुजो तीनकै अंकतैजंत्रभरैतौजहाजाईतहासिद्दहोरि॥ ६॥ जंत्रएकसै आठ नैरेअरुयामंत्रपडेॐह्रांसर्वसर्वकारजजनावैस्याहा॥ जयकैरेजाजौरे जौछैकेअांकतैजंत्रभरैतौवचनसिद्दहो ७ जोनौकेअांकतैजंत्रभरैतौहजा रई...नादीकेतीरवैठ कैतौराजावस्यहोई ८ दोकेअंकतैजंत्रभरैगं गाःजमुनाकेवाअोरनदीहोई कोईतामैलिषवहावैतौजाप्रेतकौनाउलि षैसोप्रेतवसिहोई ९ जवजंत्रलिषैतवोलेनहीदोकेअंकतैजंत्रभरैअघ

नक्षत्रमैलिषैवंदछुटावेकौरेतवारकौलिषैहस्तनक्षत्रमैदुसमनछेकरवै कौमक्षानक्षत्रमैलिषैतौकारजसिधिहोई १५ मंत्र ॐ श्रीं ह्रीं क्लींचा मुंडादेवीनमः ॥ ब्राह्मनवरनः मंत्र ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं नामभी छंअरु स्वाहाः वैरीप्रीतकरैवसीकरनसिधकरैकन्यानिरवारैचौरचीजलैग योहोईतौजंत्रलिषकैराठामैवांधैतौसर्वमिलैरोगनीकौकरै॥ वंदछुटा छुटैवैरीकौमारेचाहेतौमासानभुममैगाडेवैरीमरै॥ अांकके पंतळ ३॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गंधसौं हजार एक ॥ अग्निमे जरादे ई तौ जिहि कौ षौये चाहै तौ सब्रत अग्नि न जारत रहै १० ॥ पुरुष स्त्री कहै कै मैनहु होतौ ध्यौ ई प्यावे तौ वसि होई ११

३ जौ लाब जंत्र भरै तौ दलिद्र नसतावे एक ठौर ही मोजन ॥ आन पहुचे ॥ नार
कौ कलंमसौ लिषे आठे ॥ अंकसे एकसे तौस १२ तथा ॥ औरविधिः ॥ पुरु
वंदनमे परौ होइ तौ सात हजार ७००० जंत्र भरै चमेली कौ कलमसौं तौ वंदु
छुटे १३ ॥ पुरु दुसमन कौ छै करयौ चाहै तौ दस हजार जंत्र लिषे १००० लोहे
कौ कलमसौं पथ्यरपर तौ दुसमन कौ छै होई १४ राजा वसि करे वे कौ पुष्प

वा पर पद्रापत्र के तेरे सत कौ नाउ लिषके ॥ अग्नि मे वारदेई रोज पद्रू मैत्र कौ
नास होई ॥ अनार की कमलसौं वा लोहे ॥ पतसी वि धषा षी की विधवा
दी कौ विधि ॥ आतापि विधि की कलमसौं लिषे मिठावे सौ वैरे १०० तौ वैरी
मरै संकल्यवा के नाउ कौ करलेई ॥ आंक के पत्र मे लिषके दरयाउ मे डारै
तौ उच्चाटन होई ॥ असुभ कारज कौ कृष्ण पक्ष मै लिषे ॥ सुभ कारज कौ सु
क्ल पक्ष मै लिषे जौन कारज सिधि करै चाहै तौ कौ फल सिद्धि होई ॥
॥ पथ्या सजम ॥ मुंग की दार चाउर षाई जै दिन लिषे ॥ अवैकाम ब्रौ ॥
षै दिन लुरें काम कौ वुरें दिन ॥ अनार की कलमसौं लीषै सीधी होई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४॥

नर्वकौलोहश्रीकलमसौंलीषैमिटावैवारतौ१००तौसत्रमैरसंकलप
वंकेनउक्षोकःरीलेइ॥अर्कके पत्रपरलिषैकैदरीआउमैवहादेशीतो
सत्रकोउचाटनहोइ॥शुभकारजको शुक्लपषिअशुभकारजकोक्राम
पषिमैलिषैमेषरासिकोआतसीवृषरासिकौषाषीसिंहकोआतसी
मिथुनकौवादीजोनकारजकौरयोहैताकौतोफलसिधिहोइ॥संजमम्
गकीदारीचाउरषनैतैदिनलिषैअपैकारजकौअपैदीनकौवुरेकरज
कौवुरेदीनमैलीषैसोजंत्रदरीअउमैवहादेईएकजीनवाइर्आ१००नी
यीरीसोपासराषै॥सवसीधिहोइ॥आगीनतीकैरलैएजौनेवस्ताकैरचाहे

तौनसीधिहोइ॥लिषिमीप्रसंनहोइदेर२०००नरोगेहोइ६०००सरस्वतीप्रस
नैहोइ१०००००वाक्यसिधियोषदीसीधिहो१०००मंत्रसीधिहोइ२०००
इसुरप्रसंनहोइ४०००रीनछुटे३०००तीजोरीजाइ६०००भुतप्रतुछु
टै२०००सत्रवसैहोइ२०००उदीमलगै४०००वसीवसीकरनहोइ३०००
समभोनवंदमोचान१०००वीदेसीघरआवै२०००षेतीमलीहोइ३०००
वीसुनसे१०००मुनावानदीकेतीरमैनीहोइकेतोमृतप्रतेवसहोइ॥आष्ट
गंधसौंलीषैहजार१०००अरुजाकोमुलुलगोरहैतहोइ॥आगिनसौंजरा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वेतो मुन प्रेतुः नरहे अखी निवती अष्ट गंधसों लिषे हरजार १००० एक षो
रिकै पीवादे वैवस होइ रिक १००००० सकैलैसी धैहोइ अनारकी कलमसों
लीषै १०३० पाषान उपर अरु जो पत्रपर लीषै तो राजावस्य होइ वैद षुटीवे
के निव त्र मरे हजार ३०००० चमेली की कलमसों लीयै धरती उपरतौवं
द षुटै अरु जो दसलष भरे १०००००० लोहे की कलमसों याषान उपरतौ
सत्रकी षुयाहोइ तावी धिराजावस [illegible] के निव त्रखावार पुषन द्धित्र
मै लिषै राजावस्य होइ र विवार होइ हस्त न षित्र होइ सत्रकी षयामषा

न षित्र मै लिषै तौ दुसमन को षय होइ मंत्र ॐ ह्रीं क्लीं स्वाहा योर मंत्र जापै सवा
ल २५००० तौ सव कारज सीधि होइ चारहुं दिसांन फिर सवहा के याजा वरापा
लं १ कहा कीया यन गाफिल २ कह कि पातिक पाल ३ वा ढूं के बालक होइ ४ —
मित्र मिलै राज प्रसून होइ ६००० जौ [illegible] न चीज कीइ ३००० दुशे होइ सो घरन
होइ होती आनौ नी २५००० जंत्र लिषै जलमै चुनसो लूपे ठै कै तौ सर्व सीधि हो
इ सुभ करज को उत्त दिसा मुष करे कै लिषै वो कोरै सर्व कारज सिध्यि होइ
इती जंत्र वो धिसम पूंता कीप छतवह जंत्र को दस पंछि की परिमा तै लिषै ए
कतै एक रोज तिवय लीषै रोज पंद्रह मै १५ रोज तीषु होअनो कै हो मकै रः जंत्र
१०००

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

९॥

नक्षेसी रैन उ लिषे पहीले दीन के जंत्र पै ब्रम्हा जु कै लिषै २ दुसरे दीन के जंत्र पै वि
ष्णु जु कै लिषै ३ तीसरे दिन के जंत्र पै श्री म्हादेव जु कै लिषै ४ चैथि दिन के
जंत्र पै लक्ष्मी जु लीषै ५ पांच यो दिन के जंत्र पै जनेस जु लीषै ६ छुठ्ये जं
त्र पै गनेस जु लीषै ७ सात यै जंत्र यै हनुमान जु लीषै ८ आठ्ई जंत्र के न
उपनारसिषे लीषै ९ नमा यो न के जंत्र पै चोरासी सी धै लिषै १० दस
ये दीन के जंत्र पै वाउन जु लिषै ११ ग्यारहै यै दीन के जंत्र पै पाचउ पंडु
वा लिषै १२ वाराय दीने के जंत्र पै श्री दुर्गाजु लीषै १३ तेराही के जंत्र ॥९॥

पै पीरपै गंमर लीषै १४ चा उदही दीन कै जंत्र यै कुंलिदेवता लिषै
१५ पंद्रई दीन के जंत्र पै हीसु देवा लिषै सव जंत्रन के मिंत्र हो मकरै वो दी
वनावै सकल हो हि मिकरै ब्रां ॐ श्री गनेसं य नमः अथा जंत्र पद्रा १५ को
ताकी विधि फल उस्त्री कस्ती होइ तौ आठ के अंक ते १०० [illegible] १ नी
सी वै वालके होइ वारेंतीको १ ऐ के अंक ते भरै १०८ वार तीजा
ही जो अस्त्री के वालके न होइ तौ पंच के अंक ते भरे तौ जंत्र १००० तौ
पुत्र होइ आरु जो कोउ आपको उ षदेइ तौ ४ चारी के अंक तै भरै
तौ सत्र वहुत कस्ट पावै २ पर आरु जो वलक म्हरी ष्ट होइ तौ ७ सा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ तके अंकतैभरै १०३ तौवालककौवुधहोइ जंत्रखोरीकेपवावै अ
रुतीनीके ३ अंकतैभरै १०२ तौजलाजाईजानह सीधिहोइ जंत्र
जपेएजेर १००० होमहजार जंत्रछेहके अंकतैभरैहजार १००० तौवाच
सीधिहोइ अरु नौके अंकतौभरैनदीकेतीर जंत्रतौराजावसहो
इ अरुदोरके अंकतैभरै गंगजु अथ अष्टदसजंत्र प्रकार
लिखतेपुन अरन अष्टादसवारहस्तकौ १८००० अथ मतौ संकल्प
कु व्रति अनेन मंत्रनदिजवंधनकु जीततथाहिं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रौं हः ॥ ६ ॥

पवनपुतहनुमान अंजनीगभीय श्रीरामचंद्रकेआयसुवानी हं हं हं
सदनं उपनेनदिगवंधनंकु जीति उधठने उरादेससैं नाम जंत्र
केतरै लिखि अरौ नैभातकेमोजनकसौ लिखनी सुवरनकीवसीकरन
मोहनथंभलमै उरिदेइ उच्चाटनेदिनसंख्या १४ सौनमोचने
५००० वंदुछुटै ५००० टोनाछुटै ५००० तिजारीजई ५००० गर्भपतन
वहर १४०० मंडारप्रसनहोइ १००० वहीरो अजदी ५००० सत्रुउदस
होइ २००० वंध्यापुत्रवतीतो होइ ३००० ज्यागाकेलै ३००० संता
नहोइ ४००० सीचउतैरै १०० लाकीव्रतगीरेहोइ २००० गहीवत्ता

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥२॥

मीलैर२…वेषचैनहोइ३…गगलगतवुखे१…वलहोइर२…
पक्रुदुध्यवहुत१…चोरनीक्षौहोइ२…वसीकरनार्थेहोइ
५…राजामोहन६…परदेसीघरकौंआवै३…षेतीभलीहोइ
३…मसीनमेनरै३…विष्या।आवै३…मितीवैसाखैसुदी
२गुरु वारे सवत१९०६ पत्रसंख्या६ इसकपंश्रीतिवारीदेवीप्रसा ॥२॥
दजु

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=19.07.19 12:37
,TRANSFERRED=2019/07/19 at 12:45:16
,PAGES=10
,TYPE=STD
,NAME=S0001026
,Book Name=M-2011-SHRIPADROJATROKO VIDHAN
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection